Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

भारतीय शिक्षा को स्वामी दयानंद सरस्वती की देन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

भारतीय शिक्षा को स्वामी दयानंद सरस्वती की देन

Suman Tanwar

Research Scholar, Education, CMJ University, Shillong, Meghalaya

----------X----------

स्वामी दयानंद सरस्वती जी अपने युग के महान् समाज–सुधरक, लेखक एवं भारतीय चिंतक रहे हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में हमने उनके भारतीय शिक्षा के विकास में दिए गए योगदान का अध्ययन किया है। वर्तमान भारतीय शिक्षा में इनके शैक्षिक विचारों की उपयोगिता के महत्त्व को समझा है। उन्होंने न केवल अपने शैक्षिक व दार्शनिक विचारों से साहित्य के अध्येताओं के लिए अनेक मार्ग प्रस्तुत किए अपितु अपने समाज–सुधर के उद्देश्य के अंतर्गत अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना भी की, जो आज डी.ए.वी, गुरुकुल इत्यादि नामों से पूरे देशभर में सपफलतापूर्वक चलते हुए विद्यार्जन के क्षेत्र में अपनी अहम् भूमिका निभा रही है। वर्तमान में आज हर क्षेत्र में नारी का जो रूप उभरकर सामने आया है, यह सब स्वामीजी के अथक प्रयासों की देन है वरन् उस युग में नारी अनेक सामाजिक कुप्रथाओं का शिकार होकर शिक्षा से वंचित थी। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में हमने उनके शैक्षिक विचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसके लिए हमने ऐतिहासिक व वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया है। स्वामी दयानंद जी ने भारत देश के उत्थान के लिए अनेको कार्य किए हैं। शिक्षा के संदर्भ में उन्होंने क्या–क्या योगदान दिया है, इन सबको हमने इस शोध प्रबन्ध में लिखा है, इसके लिए हमने अनेकों पुस्तकों, पुस्तकालयों, समाचार–पत्रों, जनरल आदि का सहारा लिया है। भारतीय शिक्षा के विकास में स्वामीजी ने अपनी लेखनी के माध्यम से भी काफी योगदान दिया है, उनके द्वारा लिखित एवं निर्देशित पुस्तकें एवं धर्मग्रंथ आज भी असंख्य देशवासियों का मार्ग प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने, देशभर में शिक्षण–संस्थान, विद्यालय, महाविद्यालय खोलकर भारतीय शिक्षा के विकास में अपना अहम् योगदान दिया।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी अपने युग के महान् व्यक्तित्व थे और इनके जीवन में अनेकों कठिनाइयों होने के बावजूद भी इन्होंने शिक्षा एवं समाज–सुधार के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। उन्होंने हमारी पुरातत्व संस्कृति के महत्त्व को पहचान कर उसको बनाये रखने के लिए अथक् प्रयास किया है। वे भारतीय संस्कृति व सभ्यता को संभाल कर रखने वाले पुरोध थे। राष्ट्र के लिए उन्होंने प्रेम, सत्य व सहयोग के आधार पर एक समुदाय के रूप में रहने की शिक्षा देकर नये समाज को बनाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने व्यस्त जीवन के दौरान हमारे देश में जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार करने का कार्य किया है। इनके शैक्षिक दर्शन में आध्यात्मिकता की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इनकी शिक्षा का आधार हमारे पुराने ग्रन्थ रहे हैं। इन्होंने आत्मा की सत्ता को सभी प्राणियों में स्वीकार किया है। उन्होंने हमारे जन मानस के मस्तिष्क को गुलामी से छुटकारा पाने के लिए व अपने को उस परम तत्त्व के महत्त्व को जानने के लिए शिक्षा के विकास पर बल दिया है।

स्वामी दयानंद जी का जन्म गुजरात के परंपरावादी ब्राह्मण परिवार में हुआ। 21 वर्ष की आयु में ये गृह त्याग कर संन्यासी बन गए। इनके गुरु का नाम विरजानंद था। इन्होंने भारत की यात्राा की तथा अपने संदेश का प्रचार–प्रसार किया। 10 अप्रैल 1875 को इन्होंने आर्यसमाज की नींव रखी। इनके जीवन का उद्देश्य वैदिक ध र्म के उपदेशों का प्रचार, सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग, दीन–दुखियों की सेवा करना आदि रहें हैं। असहाय तथा दुखी की सहायता करने से मुक्ति की प्राप्ति होती है और मुक्ति प्राप्ति ही जीवन का सर्वोत्तम पफल माना गया है। इन्हें वेदों, ईश्वर, आत्मा की पवित्राता, धैर्य, अभय, नैतिकता के सिद्धंतों में विश्वास था। ये संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार समझते थे। स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन वेदों, उपनिषदों पर आधारित था। उनका विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य में परमात्मा विद्यमान है। उस परमात्मा को पहचानना, जीवात्मा का विकास करना ही शिक्षा की प्रक्रिया है। वर्तमान में जो विदेशी शिक्षा दी जाती है उसका उद्देश्य निर्बल, उत्साहहीन और दासता की बेड़ियों में जकड़े रखना है। हमें आवश्यकता है कि धर्मिक, नैतिक शिक्षा की जो हममें इच्छाशक्ति, शारीरिक, मानसिक, धर्मिक अभ्यास प्रवृति को विकसित करे अैर हमारी पूर्णता को विकसित करने में सहयोग दे सके। स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा, जन शिक्षा के महत्व को समझा और कहा कि जिस देश में स्त्री शिक्षा, जन शिक्षा पर ध्यान दिया जाएगा वही देश या समाज वास्तव में विकास कर सकेगा। स्त्रियों को भी पुरूषों के समान ही शिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे अपने गृहस्थ जीवन और कर्त्तव्यों की पूर्ति कर सकें। इसी प्रकार जन शिक्षा भी देश के विकास में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उससे संबंधित पाठ्यक्रम होना चाहिए जैसे शारीरिक, नैतिक, व्यावसायिक, कलात्मक, वेद, इतिहास, गृह विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा आदि की शिक्षा। इन विषयों के अध्ययन से ही उचित लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती है। शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति तथा पाठ्यक्रम की पूर्ति के लिए स्वामी जी ने कुछ शिक्षण विधियों का समर्थन किया–एकाग्रता विधि, विचार–विमर्श विधि, अनुकरण विध्व्याख्यान विधि, अभ्यास विधि आदि।

अध्यापक के संबंध में स्वामी जी का विचार था कि गुरु प्रकाश का पुंज है उसे व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान देना चाहिए। अपने शिष्यों के साथ उसे भक्त के सामान व्यवहार करना चाहिए। वह निस्वार्थी, शुद्धचरित्रा और शास्त्रा मर्मज्ञ होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी बच्चे को शिक्षा का केंद्र मानते थे। ज्ञान बच्चे में अंतर्निहित है, आवश्यकता है उसे अभिव्यक्ति प्रदान करने की। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी को ज्ञान–पिपासु, परिश्रमी, अनुशासित, विद्या और वाणी में पवित्रा भाव से युक्त होना चाहिए। स्वामी दयानंद सरस्वती जी के

www.ignited.in

अनुसार शिक्षा मनुष्य में ज्ञान, संस्कार और धर्मिकता की वृद्धि करती है। उसे जीवन के आनंद प्राप्ति के लिए तैयार करती है। शिक्षा के द्वारा शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आत्मानुभूति का विकास होता है। देश तथा समाज के विकास के लिए स्त्री शिक्षा तथा सार्वजनिक शिक्षा को महत्व देना चाहिए। शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उचित पाठ्यक्रम होना चाहिए। स्वामी जी द्वारा बताया गया शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यापकता लिए हुए है। विद्यार्थियों को आयु और अवस्थानुसार वेद, संस्कृत साहित्य, ध्वनि सि(ांत, व्याकरण, पौराणिक ग्रंथों के चयनित विषय, न्याय, मीमांसा, वैशेषिक, योग, ज्योतिष, गणित, भूगोल आदि की शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एकाग्रता विधि भाषण विधि तर्क–वितर्क विधि स्वाध्याय विधि आदि का प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक के विषय में दयानंद जी आदर्शवादी थे। उनके अनुसार अध्यापक ज्ञानी, आदर्शवादी, चरित्रावान, शास्त्रा मर्मज्ञ होना चाहिए। अध्यापक की भूमिका एक रक्षक, निर्देशक होनी चाहिए। विद्यार्थी के संबंध में दयानंद जी के विचार थे कि विद्यार्थी एक आध्यात्मिक जीव असीम सत्ता है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि विद्यार्थी एकाग्र, अनुशासित, चैतन्य, समर्पण, विवेकशील होना चाहिए। उनमें तथा शिक्षकों के संबंध मैत्रीपूर्ण हों तो ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य आसानी से प्राप्त हो जाएगा। स्वामी विवेकानंद तथा स्वामी दयानंद दोनों ही महान विद्वान, दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधरक थे। उनमें शिक्षा–दर्शन में समानता और असमानता के तत्व विद्यमान थे। समानता के संदर्भ में कह सकते हैं कि शिक्षा के उद्देश्य, उनकी प्राप्ति का माध्यम –शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम समान हैं। दोनों ने ही व्यक्ति का संपूर्ण विकास, स्त्री शिक्षा, जन शिक्षा, वैदिक शिक्षा को शिक्षा का उद्देश्य बताया है। शिक्षा के इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए माध्यम–पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियाँ भी समान हैं। दोनों शिक्षा शास्त्रीयों ने स्वाध्याय विधि, तर्क–वितर्क विधि, विचार–विमर्श विधि, एकाग्रता विधि को महत्त्व दिया है। दोनों ही विद्यार्थी में जिज्ञासा, परिश्रम, एकाग्रचित्तता, आज्ञाकारिता, आध्यात्मिकता जैसे गुणों की विद्यमानता पर बल देते हैं। शिक्षा को विद्यार्थी केंद्रित अर्थात विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार होना चाहिए। साथ ही इस का ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने योग्य बना सके। शिक्षा प्रदान करने के लिए क्रियात्मक विधि को उपयुक्त माना क्योंकि मनुष्य क्रियाशील प्राणी है। वह किसी कार्य को करके ही शीघ्रता से सीखता है तथा शिक्षा व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा नहीं कर सकती, उसे स्वावलंबी नहीं बना सकती, वह शिक्षा व्यर्थ ही है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए क्योंकि मातृभाषा किसी भी देश की आत्मा होती है, उस देश में मातृभाषा को समझने वालों की संख्या अधिक होती है। अतः देश के विकास तथा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जनभाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए।